शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

वर्तमान संन्दर्भ में साहित्य से अपेक्षाएँ

बीज शब्द :

कोरोना काल मे शिक्षा, साहित्य, भारतीय समाज

प्रस्तुत शोध आलेख में उपभोक्तावादी संस्कृति से उपजी समास्याओं पर विचार किया गया है एवं वर्तमान समय में कारोना महामारी एक मानव जीवन पर प्रभाव को समझाया गया हैं कि कोराना महामारी का मानव पर प्रभाव घातक हैं किन्तु यह प्रकृति के लिए शुभ संकेत है। नदियाँ सदानीरा हो रही हैं। आलेख मे रहीम के दोहे द्वारा समझाया गया है कि आपदा या विपत्ति में ही अपने परायें की पहचान होती है, लेख में साहित्यक प्रवृत्तियों पर विचार किया गया है कि साहित्यकार को आदिकवि बाल्मीकि और वेदव्यास की श्रेणी का होना चाहिए। लेखक जब मनाशक्त भाव से रचना करता है तो उसकी आत्मानुभूति सामान्य जन की अनुभूति हो जाती है। अत: लेखक को अनाशक्त भाव से रचना करनी चाहिए। आलेख में वर्तमान साहित्य के प्रसंग में यह समस्या उठाई गई है कि वर्तमान साहित्य आपसी विद्वेष एवं निम्न जीवन मूल्यों के कारण साहित्य के श्रेष्ठ मूल्यों पर खरा नही उतर रहा है। अत: साहित्यकार को बुद्धि संवेदनाओं के सहचर द्वारा साहित्य सर्जन करना चाहिए। आलेख में भिखारी ठाकुर के लोक नाट्य की प्रस्तुत 'बेटी बेच' कुप्रथा के सत्य को उजागर किया है। अत: साहित्य का लक्ष्य भी समाज में सत्य को उजागर करना है। लेख में विद्यानिवास मिश्र के उदाहरण द्वारा बताया गया है 'वर्तमान समय में ऐसा साहित्य लिखा जाना चाहिए जो लोगों में चेतना जाग्रत करें और भविष्य में एक बेहतर समाज का निर्माण करें और वर्तमान महामारी जनित समास्य से आगे बढ़ने का मार्ग निर्देशित करे।

*****

प्रो० यशवंत सिंह
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय
इफाल (मणिपुर)

वर्तमान संन्दर्भ में साहित्य से अपेक्षाएँ

वर्त्तमान संदर्भ 'कोरोना काल का हैं। कोरोना एक संक्रमण जनित बीमारी हैं, जो आपदा के रुप में विश्व कें समक्ष उपस्थित हुई है। यह आपदा दैवीय हैं या चीन की साज़िश का परिणाम हैं, इस पर बहस चल रही हैं। लेकिन यह तय हैं कि समय समय पर प्रकृति अपने को समायोजित करती हैं। पिछले सौ वर्षों में आद्यौगिक क्रन्ति जनित विकास ने प्रकृति था इतना विनास किया है? जितना एक हजार वर्षों में नही हुआ था। अब कोरोना संक्रमण से बचाव हेतू 'लॉकडाउन' की निरस्तरता के कारण मानव-गतिविधियाँ एक-सी गयी हैं। जिससे यह देखने-सुनने में आ रहा है कि नदियाँ सदानीरा हो रही हैं। शहर प्रदूषण से मुक्त हो रहे है, आसमान साफ दिखाई पड रहा हैं। मनुष्य भी अत्यधिक उपभोगतावादी प्रवत्तियों पर विराम लग रहा है। वह न्यूनतम जरुरतों पर जीवन-निर्वाह कर रहा है। शारीरिक रुप से अपने-अपने घरों में बन्द रहनें के कारण वह अपने परिवार के साथ सुख-दुख बाँट रहा हैं, जिससे मानसिक तनाव कम हो रहा है। यह प्रकृति एवं मनुष्य के लिए शुभ संकेत है। अत: हमस ब को इस कोरोना रुपी आपदा को अवसर के रुप में बदलने का प्रयास करना चाहियें। जिसके लिए रहीमदास जी का प्रस्तुत दोहा समीचीन शिक्षा प्रदान करता है।

''रहीमन विपदा हुँ भली, जो थोडे दिन होय।
हित-अनहित का जगत में, जान परत सब कोय।।

अर्थात कुछ समय के लिए आयी विपत्ति या आपदा भी भली हैं, क्यों इससे अपने-पराये की पहचान हो जाती है। परम्परा में आपदा को अवसर कें रुप में लेने के साक्ष्य मिलते है। अत्यधिक उपभोगतावादी देव-संस्कृति के विनाश के बाद निराश-हताश मनु ने श्रद्धा से प्रेरणा पाकर देव संस्कृति के विनास के बाद निराश-हताश मनु ने श्रद्धा से प्रेरणा पाकर देव संस्कृति के अवशेषों से श्रम व कार्यशील मानव-संस्कृति का निर्माण किया था। शस्त्रों में भी आपदा कों अवसर मानते हुए' आपदा-धर्म की बात की गयी है-

आपदा काल परखिये नारी,
धीरज,धर्म, मित्र, अरु नारी।'

अर्थात आपदा-काल में अपनें अंदर विद्यमान धैर्य एवं धर्मयुक्त आचरण की परख करनी चाहिए। वही इस समय समाज में विद्यमान अपनें शुभचिंतक मित्रों की एवं परिवार की स्त्री(पत्नी) की पहचान भी हो जाती हैं।

साहित्य''मनुष्य की सर्वोत्तम कृति है। मानव-समाज को उसके समस्त परिवेश के साथ जानने-समझने के जितने माध्यम उपलब्ध है, उनमें सबसे पूर्ण और मधुर उसका साहित्य है। आचार्य भामह ने ''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'' कहकर शब्द और अर्थ के साहित्य सहित भाव को काव्य यानि साहित्य की संज्ञा प्रदान की। साहित्य में यह भाव शब्द और अर्थ के साथ ही व्यष्टि और समष्टि के रुप में भी परिलक्षित होता है। साहित्य प्रारम्भ में किसी व्यक्ति-विशेष के भावों-विचारों का प्रस्फूटन होता है, जो साधारणीकरण की प्रक्रिया से गुजरकर सभी की समष्टिगत धरोहर हो जाता है। इसे 'स्वात: सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा' कहने से व्यक्तितत्व का परिष्कार होने के साथ ही समाज द्वारा उसका अवगाहन करने से सभी का हित संभव हो जाता हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'रामचरितमनास में इसी को लक्षित करते हुए लिखा हैं।

'कीरति भनित भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।

अर्थात किसी व्यक्ति का अर्जित यश, उसका कथन यानि साहित्य तथा उसकी उपलब्धियाँ तभी सार्थक है, जब वे सुर-सरि गंगा के समान सभी के लिए हितदायंक हो। लेकिन साहित्य का लक्ष्य सब का हित साधने के साथ ही सत्य एवं प्रिय का निरुपण करना भी होता है। साहित्य ब्रम्ह के समान सत्य का अनुसरण करता है, वह ऐसे सत्य को कहने से बचता है। जो किसी को अप्रिय लगे ,उससें हानि होने की सम्भावना हो। अत: वह सत्य को मधुर कथन से प्रिय बनाता है तथा कभी-कभी हित साधने के लिए सत्य कथन की भंगिमा को बदल देता हैं। जो सत्य कथन सभी को प्रिय लगे, निश्चित ही वह सुरसरि गंगा के समान सब के लिए हित या कल्याणकारी होता है। बिहारीलाल ने नई पर आसक्त जयसिंह को राज निसुरता को लक्षित करते हुए ऐसे ही सत्य एवं प्रिय बचाने से युक्त सदा लिखकर भेजा था।

'नही पराग नहि मधुर रथ,नहि विकास रहि काल।

टति कक्षि दी जों निधयों, अनजो कौन हवाज।।

कहते है कि इसी दोहे को पढकर महाराज जयसिंह की आजसक्ति कही भी तथा में युक्त हुए थे।

भारतीय मनीसियों का आदर्श रहा है कि 'लिखना उसी को चाहिये जों अपने जीवन में संघर्ष की अवस्था को पार कर चुका हो। जो समदर्ज़ी न अनासक्त हो ,विदेह भाव को प्राप्त कर चुका हो। आदिकवि वाल्मीकी एवं महर्षि वेदव्यास को इसी श्रेणी में रखा जाता हैं। जिन्होने अपने जीवन के संघर्षे को पार करते हुए रामायण एवं महाभारत महाकव्यों की रचना की। लेकिन पश्चिमी विचारकों का ध्येय रहा हैं कि संघर्षों से रुबरु हो रहा व्यक्ति ही अधिकार हो सकता है। महाकवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी' निराला का साहित्य इन दोनों का अनुपम संगम है। उन्होने अपने जीवन में अनेक अभावों उपेक्षाओं से संघर्ष करते हुए भी अनाशक्त भाव से अपनी पुत्री की मृत्यु पर 'सरोज-स्मृति' कविता लिखी। जिसमें उनका व्यक्तिगत कथन-

''दुज ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नही कही।''

साधारणीकृत होकर समष्टिगत अनुभुति के रुप में अभिव्यक्त हुआ। जो कमावेश रुप में अधिकांश साहित्यकारों की कव्यगाथा बन गया।

साहित्यकार की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं। उनके सुख-दुख को समझना, उन्हें मनुष्यता के पवित्र आसन पर भेजना साहित्य के रचनाकार का दायित्व कुछ अधिक बढ़ जाता है। क्यों की वह समाज के अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील व सजग व्यक्ति श्रमशील है, अपने श्रम के माधयम से जीविका प्राप्त करते है, वे किसान मजदूर कहलाते हैं। (श्रम के साथ जीवका) का प्रयोग करने वाले कारीगर, डॉक्टर, इंजीनियर, व वैज्ञानिक कहलाते है। लेकिन श्रम व बुद्धि के साथ अपनी संवेदनाओं का साहचर्य करने वाले कलाकार, साहित्यकार कहलाते है। वे अपनी तूलिका- लेखनीवाणी के द्वारा मनुष्य को उसकी मनुष्यता का एहसास दिलाने का कार्य करते हैं। (सुप्रसिद्ध) लोकनाट्यकर्मी भिखारी ठाकुर के समय बिहार के भोजपुर क्षेत्र में अधिकांश गरीब-लाचार पिता दहेज न चुका पाने के कारण अपनी बेटियों को प्रोढ़ या वृद्ध वर के हाथों बेचने को मजबूर हो रहे थे। इसी 'बेटी-बेच' कुप्रथा को

जब भिखारी ठाकुर ने लोकमंच पर प्रदर्शित किया तो नवविवाहिता बेटी के कारण करुण प्रलाप को देख-सुनकर सभी उपस्थित दर्शकों की आँखों में आँसुओं की झडी़ लग गयी। जिन्होंने अपने घर की बेटियों के साथ ऐसा कुकृत्य किया था, उन्हें अपनें द्वारा की गयी गलतियों का अहसास हुआ तथा उन सबने आगें से ऐसा बुराकृत्य न करने तथा ऐसा करने वाले को रोकने का संकल्प लिया।

आचार्य विद्यानिवास मिश्र कें अनुसार-'साहित्य की पहचान धूप की तरह होती हैं। जों निरन्तर बदलती रहती है।' जाड़े की मीठी-मीठी धूप का आनन्द निश्चय ही वैशाख-जेठ की प्रखर धूप से विल्य होता है। साहित्य कंचन नही है, जिसकी परख के लिए एक ही कसौटी का आचार्य विद्यानिवास मिश्र कें अनुसार- (साहित्य की पहचान धूप की तरह होती हैं। जों निरन्तर बदलती रहती है।' जाड़े की मीठी- मीठी धूप का आनन्द निश्चय ही वैशाख-जेठ की प्रखर धूप से विल्य होता है। साहित्य कंचन नही है, जिसकी परख के लिए एक ही कसौटी काफी हो। बल्कि साहित्य कंचन के पानी की तरह है), वह जिस पर चढ़ता है, उसी के अनुसार निखार पाता है। साहित्य का स्वर प्रश्नाकुल बालिका की तरह कोमल व मधुर होता है, जो मन में अहलाद पैदा करता हैं। वही साहित्य का मर्म व्यक्ति को उसकी कुहनी में लगी चोट की तरह बेघता रहता है। एक हिन्दी लोकगीत के भावार्थ वर्णन में 'नवविवाहिता बहन पहली बार अपने मायके आती है। उसके साथ बचपन से खेलने वाला छोटा भाई पूछता है- बहन तुम्हें ससुराल में मेरी याद आती है। बहन जवाब देती है- हाँ मुझे ससुराल में तुम्हारी बहुत याद आती है। तब छोटा भाई पूछता है कि मेरी किस तरह की याद आती है, तो बहन कहती है मुझे तुम्हारी याद कुहनी मे लगी चोट की तरह आती है। इस तरह के जवाब सुनकर छोटा भाई बहन सें नाराज हो जाता है कि मेरी तुलना कुहनी में लगी चोट से करती हों अब बहन के पुनः ससुराल चले जाने के बाद एक बार छोटा भाई खेलते समय जमीन पर गिर पड़ता है, जिससे उसकी कुहनी में चोट से उठे भयंकर दर्द से जब-तब कराह उठता है तो उसे अपनी बहन द्वारा कही गयी बात याद आती है। उस समय उसकी चोट युक्त कुहनी में उठता भयंकर दर्द बहन के विदोह में परिवर्तित हो जाता हैं। वह

बहन की याद में बिसूरने लगता है। इस तरह मनुष्य को सुख-दुख का एहसास कराना , उसे मानवीय सम्बन्धों से युक्त करना यही साहित्य का परम लक्ष्य एवं कर्तव्य हैं।

मानवीय गुणों से युक्त होने कें कारण साहित्य मानव समाज को आगे ले जाने में समर्थ होता है। मनुष्य द्वारा निर्मित अन्य कृतियाँ उसे वर्तमान काल में ही सुख से संयुक्त करने का आभास देती है। लेकिन साहित्य मनुष्य को वर्तमान से आगे ले जाकर उसके भविष्य की दिशा निर्धारित करता है। इसी लिए मुंशी प्रेमचन्द्र ने साहित्य को समाज व राजनीति के आगे -आगे चलने वाली मशाल कहा है, जो समाज को निरंतर आगे बढने के लिए प्ररित करता है, उसे अधंकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। समाज में जिन दुष्टप्रवृत्तियों का प्रकाश हो जाता है।उन्हें पूरकर समाज को गतिशील बनायें रखता है। कोरोना काल में साहित्य को अपने इसी दायित्व का बखूबी निवर्हन करना होगा । उसे मनुष्य के जीवन में आयी क्षणिक निराशा को दूरकर आशा का संचार करना होगा। जिससे मनुष्य अन्य आपदाओं की तरह इससे भी पार पाने में सक्षम हो सके -

' झुका दिया है अगर सर यकीन रख प्यारे,
बनेगा तेरा भी मुकददर यकीन रख प्यारे।
पहाड़ काट दिये है गुजरती मौजो ने तो क्या है राह का पत्थर
यकीन रख प्यारे ।
तेरी खुदी ही उबारेगी हर मुसीबत से,
किसी से हो न हो खुद पर यकीन रख प्यारे।
झुका दिया है अगर सर यकीन रख प्यारे।
बनेगा तेरा भी मुकददर यकीन रख प्यारे।।

सहायक ग्रन्थ - सूची

1. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण ,

2. श्री रामचरितमानस, टीकाकार- हनुमान प्रसाद पोद्दार गीताप्रेस,गोरखपुर , एक सौ आठवाँ पुनर्मुद्रण,; संवत 2072

3. एक बूँद सहसा, उछली , सचिदानन्द बाटस्यामन' अज्ञेय'

4. भारतीय व्यायशास्त्र डा0तारकनाथ बाली वाणी प्रकाज़न नयी दिल्ली , आशन्ति 2017

5. तमात्र के झरोल से विद्यानिवास मिश्र , राधाकृष्ण , नई दिल्ली तृतीय संस्करण,1992

6. प्रेमचंद साहित्य: कुछ विचार प्रेमचंद, डायमण्ड पाकेट बुभ्स, नई दिल्ली, संस्करण,2002

7. आवारा मसीहा, विष्णु प्रभाकर , राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण 2009

◆◆◆